B.A. Part-III

Developmental Psychology

Dr. Usha Choudhary

Questionaire method

Nature

प्रायः बच्चों या व्यक्तियों से उनके व्यक्तित्व संबंधी गुणों, उनकी समस्याओं, संवेगों, रुचियों, मनोवृत्तियों, इच्छाओं एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित सूचनाओं की जल्दी आवश्यकता होती है तो विकासवादी मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रश्नावली विधि का प्रयोग करते हैं। प्रश्नावली किसी समस्या से संबंधित relevant (संगत) प्रश्नों की एक सूची होती है जिसकी सहायता से आवश्यक तथ्यों का संकलन किया जाता है। प्रश्नावली विधि का प्रतिपादन सर्वप्रथम मनोवैज्ञानिक Stanley Hall (स्टैनले हाल) द्वारा 1891 में किया गया उन्होंने अपने सहयोगी Long (लांग) महोदय की सहायता से सन् 1894 में प्रश्नावली विधि का प्रशासन करके बोस्टन स्कूल के बच्चों के अवांछित व्यवहारों के संबंध में जानकारी अर्जित की। इस प्रश्नावली में 123 प्रश्न थे। प्रश्नावली सूचनाओं की प्राप्ति का एक सरल एवं उत्तम माध्यम है। जिसमें प्रश्नों के उत्तर स्वयं उत्तर देने वाला ही भरता है। इस विधि में अध्ययन कर्ता बच्चों की जिस समस्या के बारे में अध्ययन करना चाहता है उस समस्या से संबंधित कुछ प्रश्नों का एक सूची तैयार कर लेता है और उसे booklet के रूप में छपवा कर उन बच्चों से भरवाया जाता है।

प्रायः मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में अध्ययन कर्ता द्वारा तीन प्रकार की प्रश्नावलियों का उपयोग किया जाता है, जिनका वर्णन निम्नलिखित इस तरह है —

(1) **Closed Questionaire** → इसके अंतर्गत प्रश्नों के सामने कई विकल्पी उत्तर भी दिये रहते हैं जिनमें से उत्तर देने वाले को चुनकर किसी एक विकल्प पर निशान लगाना होता है। उदाहरण के रूप में प्रश्न - भारत का राष्ट्रीय पक्षी है — उत्तर (a) तोता, (b) कबूतर, (c) मोर, (d) बाज। अतः उपर्युक्त प्रश्नों से संबंधित चार विकल्पों में से किसी एक को चुनकर बच्चे को अपना उत्तर देना होता है।

(2) **Open Questionaire** → इसके अन्तर्गत प्रश्नावली निर्माता की ओर से किसी प्रकार का वैकल्पिक उत्तर नहीं दिया जाता है: अर्थात प्रश्नों का उत्तर उत्तरदाता को स्वयं अपने मन से देना पड़ता है। तुलनात्मक रूप से सूचना संकलन की दृष्टि से open-end questionaire method महत्वपूर्ण विधि है। इससे उत्तरदाताओं द्वारा प्राप्त

उत्तर विस्तृत एवं गुणात्मक होते हैं।

(3) Mixed Questionaire → मिश्रित प्रश्नावली वैसी प्रश्नावली को कहा जाता है जिसमें कुछ प्रश्नों के वैकल्पिक उत्तर प्रश्नावली निर्माता की ओर से दिये रहते हैं और कुछ प्रश्नों के उत्तर उत्तरदाता को स्वयं अपने मन से लिखना होता है। इस प्रकार की प्रश्नावली का उपयोग वर्तमान समय में बच्चों से संबंधित विभिन्न समस्याओं के अध्ययनार्थ, तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के रूप में आधिकांशतः किया जा रहा है। अतः मिश्रित प्रश्नावली उस प्रश्नावली को कहा जाता है जिसमें सीमित एवं मुक्त प्रश्नावलियों के गुणों का योग दृष्टिगत होता है।

वास्तव में प्रश्नावली विधी विकास के विभिन्न पक्षों का objective (वस्तुनिष्ठ) एवं सफल अध्ययन करने वाली महत्वपूर्ण विधी है। प्रश्नावली निर्माण में यह नितांत (बहुत) आवश्यक है कि समस्या से संबंधित प्रश्न सरल, रुचिकर एवं संगत प्रकार के हो जिसका सभी के ऊपर (जैसे - बच्चे, अभिभावक, शिक्षक आदि) लागू किया जा सके।

Merits of Questionaire method

प्रश्नावली विधी के निम्नलिखित गुण (merits) होते हैं:—

(I) प्रश्नावली के प्रश्नों का निर्माण करते समय बच्चों की रुचि, पसंद, संवेगात्मक अनुभूतियों एवं स्वास्थ्य का ध्यान दिया जाता है।

(II) अध्ययनकर्ता उत्तरदाता को अध्ययन में पूर्ण सहयोग करने के लिए पर्याप्त रूप से motivate एवं प्रोत्साहित करता है।

(III) प्रश्नों का स्वरूप सरल, आकर्षक, रुचिकर एवं सुबोध होता है।

(IV) भ्रामक, कठिन, अव्यावहारिक एवं द्विअर्थी शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(V) प्रश्नावली विधी से प्राप्त सूचनाएँ विश्वसनीय एवं प्रमाणित होती हैं।

(VI) प्रश्नावली विधी का ~~बाल~~ विकासात्मक एवं बाल विकास परिप्रेक्ष्य में किये जाने वाले अध्ययनों में उपकरण के रूप में महत्वपूर्ण योगदान है।

Demerits of Questionaire method

उपर्युक्त गुणों के होते हुए भी प्रश्नावली विधी में अनेक दोष भी पाया जाता है जो निम्नलिखित इस प्रकार है—

(1) प्रश्नावली विधी का उपयोग छोटी - छोटी समस्याओं के लिए ही किया जा सकता है।

(ii) अधिकतर उत्तरदाता प्रश्नावली भरने में अरूचि दिखाते हैं इस विधी का प्रयोग अशिक्षित लोगों पर नहीं किया जा सकता है।

(iii) कुछ प्रश्नों को लोग नहीं समझ पाने के कारण, उसका उत्तर नहीं देते हैं। अध्ययनकर्ता के पास बच्चों के उत्तरों की विश्वसनीयता को जाँचने के लिए कोई साधन नहीं होता है। अतः इससे प्रश्नावली विधी की विश्वसनीयता पर प्रश्न-चिन्ह लग जाता है।

(iv) कुछ प्रश्नों का उत्तर उत्तरदाता द्वारा जान-बूझकर गलत दिया जाता है क्योंकि वास्तविक उत्तर से उनके वैयक्तिक गुणों/अवगुणों पर प्रकाश (जानकारी) पड़ने का डर रहता है। ऐसा आधिकांशतः व्यक्तित्व के संदर्भ में होता है।

(v) प्रायः अभिभावक अपने बच्चों की कमियों को छिपाने के लिए गलत उत्तर दे देते हैं।

(vi) कभी-कभी कुछ लोग उत्तर को रोचक बनाने का प्रयास करते हैं जिससे वे सत्यता से दूर चले जाते हैं।

(vii) अक्सर यह देखा गया है कि वास्तविक उत्तरदाता की अपेक्षा परिवार के अन्य सदस्य द्वारा प्रश्नावली भरकर वापस कर दी जाती है जिसके कारण प्राप्त उत्तरों की मौलिकता सन्देहास्पद हो जाती है।

यदि उपर्युक्त दोषों का निराकरण सावधानी-पूर्वक किया जाए तो प्रश्नावली विधी की विकासात्मक मनोविज्ञान एवं दूसरे विज्ञानों में इस विधी की उपयोगिता कम नहीं होगी।